व्यष्टि (सूक्ष्म) तथा समाष्टि (व्यापक) अर्थशास्त्र
(Micro and Macro Economics)

व्यष्टि अर्थशास्त्र :-

सूक्ष्म अथवा व्यष्टि अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषण की वह शाखा है जो विशिष्ट आर्थिक इकाईयों तथा अर्थव्यवस्था के "छोटे खण्डों" के व्यवहार तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है। जैसे- विशिष्ट फर्मों, विशिष्ट उपभोक्ता, विशिष्ट वस्तुओं या विशिष्ट साधनों की कीमतों का अध्ययन आदि।

प्रो० बोल्डिंग (Boulding) के शब्दों में :-

"सूक्ष्म अर्थशास्त्र, विशिष्ट फर्मों, विशिष्ट परिवारों, व्यक्तिगत कीमतों, मजदूरियों, आयों, व्यक्तिगत उद्योगों तथा विशिष्ट वस्तुओं का अध्ययन है।"

सूक्ष्म अर्थशास्त्र की आवश्यकता एवं प्रयोग :-

1. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने के लिए यह आवश्यक है कि जिन व्यक्तिगत इकाईयों को मिलाकर अर्थव्यवस्था बनी है, उनका विधीवत् अध्ययन किया जाय। इसप्रकार, सूक्ष्म विश्लेषण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को समझने में सहायक होता है।

2. सूक्ष्म विश्लेषण के अन्तर्गत उत्पादन के विभिन्न साधनों के बीच उनके पुरस्कारों का वितरण तथा वस्तु विशेष की कीमत निर्धारण का अध्ययन किया जाता है।

3. यह व्यक्तिगत इकाईयों की कार्यक्षमता का अध्ययन कर उनकी समस्याओं के समाधान में सहायक है।

Notes:

4. व्यष्टि अर्थशास्त्र व्यक्तिगत आय, बचत, तथा विनियोग के स्रोतों तथा उनके स्वभावों की विश्लेषणात्मक विवेचना करता है।

सीमाएँ

सूक्ष्म अर्थशास्त्र

1. यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अधूरा चित्र प्रस्तुत करता है।

2. सूक्ष्म अर्थशास्त्र पूर्ण रोजगार एवं पूर्ण प्रतियोगिता जैसे अनेक अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है।

3. सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अनेक निष्कर्ष सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की दृष्टि से सही नहीं होते। जैसे- बचत करना।

4. पूर्ण रोजगार नीति, मौद्रिक एवं वित्तीय नीति, राष्ट्रीय आय के न्यायपूर्ण वितरण जैसे अनेक आर्थिक समस्याओं का अध्ययन सूक्ष्म अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नहीं किया जा सकता है।

समष्टि (व्यापक) अर्थशास्त्र :-

समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था का सामूहिक रूप से अध्ययन किया जाता है। इसप्रकार, इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय आय, कुल उत्पादन, कुल उपभोग, कुल बचत, कुल विनियोग जैसी यौगिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इसीलिए इसे सामूहिक अर्थशास्त्र या यौगिक अर्थशास्त्र भी कहते हैं।

प्रो० बोल्डिंग के अनुसार :-

"व्यापक अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र का वह भाग है जो बड़े समूहों तथा औसतों का अध्ययन करता है, न कि विशिष्ट मदों का और इन समूहों को उपयोगी ढंग से परिभाषित करने का प्रयास करता है तथा इसके पारस्परिक सम्बन्धों की जाँच करता है।"

समष्टि विश्लेषण के प्रयोग एवं महत्व

1. समष्टि विश्लेषण में आर्थिक नीतियों का सम्बन्ध व्यक्ति विशेष से न होकर सम्पूर्ण समाज या अर्थव्यवस्था से होता है।

2. व्यापक विश्लेषण एक गतिशील एवं जटिल अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली को समुचित रूप से समझने में सहायक है।

3. गतिशील अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं जैसे- व्यापार चक्र, राष्ट्रीय आय तथा रोजगार आदि के विश्लेषण तथा समाधान ढूंढने मे यह विधि सहायक है।

4. मुद्रा-मूल्य निर्धारण के सिद्धान्त की व्याख्या व्यापक विश्लेषण की सहायता से ही सम्भव है क्योंकि इसमें मुद्रा-मूल्य के परिवर्तनों का सम्पूर्ण समाज पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या की जाती है।

सीमाएँ -

(1) इस पद्धति मे समूह का तो अध्ययन किया जाता है पर समूह के विभिन्न अवयवों का अध्ययन नहीं।

(2) समूह या योग के आधार पर निकाले गये निष्कर्ष भ्रम भ्रामक हो सकते हैं।

(3) यदि समूह का निर्माण करने वाले घटक परस्पर असम्बद्ध हो तो परिणाम दोषपूर्ण हो सकते हैं।

(4) समूह की माप सम्बन्धी कठिनाइयाँ।